: PHYSICAL v/s HUMAN GEOGRAPHY : (6)

भूगोल के दो मुख्य पहलु पृथ्वी एवं मानव के कार्यों की व्याख्या अंतर्संबंधित रहते हुए भी स्पष्टतः भिन्न लक्षणों वाली मानी जाती रही है। परिणामतः एक ही विषय के अंग होने के बावजूद विद्वानों के कार्य पद्धति के कारण कई बार यह एक दूसरे के विपरीत अथवा स्वतंत्रप्राय रूप मे बना रहा। इसका प्रमाण प्राचीन काल से ही मिलता है। ईसा पूर्व के विद्वानों, आचार्यों, ऋषियों मे कुछ ने पृथ्वी, चाँद, ग्रहन क्षत्र, भूतल पर कार्यरत बाह्य एवं आंतरिक शक्तियों पर अपना विचार व्यक्त किया तो कुछ ने प्रदेश के निवासियों, उनके , उद्यम, यातायात प्रणाली आदि पर। इस तरह भूगोल मे द्वैधता प्राचीन समय से ही बनी हुई है जो समय-समय पर Physical v/s Human, Systematic v/s Regional; Inductive v/s Deductive ; Determinism v/s Possibalism के रूप मे सामने आते रहा है।

Dualism :- द्वैतवाद से तात्पर्य किसी विज्ञान या विषय के दो प्रकार के दृष्टिकोण को देखते हुए उसकी प्रधान शाखाओं अथवा उपागम को ही संपूर्ण विषय मानकर विषय को दो भागों मे बाँटना होता है। निश्चित रूप से ऐसी विभाजन विद्वानों के मस्तिष्क के अंतर्द्वंद्व का प्रतिफल होता है।

जहाँ तक मानव बनाम भौतिक भूगोल के द्वैधता का संबंध है, संभवतः इसका विकास ग्रीक विद्वानों द्वारा हुआ था। स्ट्रैबो हेरोडोटस जैसे विद्वानो ने जहाँ भूगोल के मानवीय पक्ष पर विशेष बल दिया वहीं हिकेटियस ने भौतिक भूगोल पर। आधुनिक काल मे वारेनियस पहला विद्वान था जिसने 1650 मे Geographia Generalis प्रकाशित कर भौतिक एवं मानव भूगोल मे सन्निहित भिन्नता की ओर ध्यान दिलाया किन्तु दोनों के बीच वास्तविक रूप से द्वैधता 19वीं सदी के अंतिम दशक से ही शुरु होती है जब भौतिक भूगोल का प्रयोग अनावश्यक रूप से संकुचित अर्थों मे शुरु हुआ। इससे सभी जैवकारक (वनस्पति, जीव एवं मानव प्रजाति को बाहर कर सिर्फ

अजैविक स्थल के अध्ययन को ही शामिल किया गया। इसके प्रतिक्रिया मे रेटजेल, हेकल, ब्राफिल डिमोलिन्स, कुमारी सेम्पुल जैसे विद्वानो के वर्ग भी हुए जो मानव भूगोल को ही भौगोलिक अध्ययन का आधार माना। अस्तु मानव बनाम भौतिक भूगोल के ऐतिहासिक द्वैधता को भिन्न रूपो मे वर्णन किया जा सकता है :-

PHYSICAL GEOGRAPHY.

वारेनियस द्वारा भूगोल के दो शाखाओ के विकास के उपरांत, 18वी सदी मे काण्ट ने भौतिक भूगोल पर अपना व्याख्यान दिया। हम्बोल्ट ने भी मुख्य रूप से भौतिक भूगोल मे ही अपनी रुचि दिखाई। इसके बाद Reclus नामक विद्वान ने Le Terre (भौतिक भूगोल) के अध्ययन पर जोर दिया। डार्विन महोदय ने भी "Struggle and Survival" संकल्पना प्रतिपादित करके मे भौतिक भूगोल पर ही जोर दिया। इसी समय 1848 ई० मे Mare Somerville ने भौतिक भूगोल प्रकाशित की जिससे अन्य विद्वानो का झुकाव भी इस तरफ बढ़ा। और 19वी सदी के मध्य तक ज्यादातर भूगोलवेत्ता भौतिक भूगोल की ओर अधिक उन्मुख हो गये थे। इनलोगो ने भू-आकृति विज्ञान को स्थापित किया। 'Geomorphology' शब्द के जनक अलबर्ट पेन्क ने Landforms evolution का सिद्धान्त प्रतिपादित कर स्थलाकृति के व्यवस्थित अध्ययन क्षेत्रीय दृष्टिकोण (Chorological point of view) से करके। आगे चलकर कौपेन, डेविस, मोरटोनें, मिल, जैफरसेन एवं डोकुचेव ने स्थलाकृति एवं जलवायु को ही भूगोल का क्षेत्र मानते हुए उसी पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। डेविस भी इसी काल मे सामान्य अपरदन चक्र संकल्पना प्रस्तुत की। इन के बीच 'मानव' पूर्णतः उपेक्षित रहा। रेटजेल एवं कुमारी सेम्पुल ने भी भौतिक वातावरण पर ही ज्यादा जोर दिया। हंटिंगटन ने सभ्यता के स्थानान्तरण लिखते हुए

अपना मत दिया कि ऐसा जलवायु एवं मौसम की दशाओं के कारण हुआ है। मैकिन्डर, रिच थोफेन, रॉबर्टसन ने भी भौतिक भूगोल को ही भूगोल का मुख्य क्षेत्र माना। सोवियत रूस के विद्वानों ने भी भूगोल को भू आकृति विज्ञान, मृदा विज्ञान, जल विज्ञान एवं मौसम विज्ञान से ही संबंधित माना। इस तरह स्पष्ट है कि विद्वानों की कई पीढ़ियाँ हुई जिन्होंने भौतिक भूगोल को भूगोल का सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग या उसी को पर्याय माना।
एवं East ने तो यहां तक कहा -

It's futile to assert that human or social geography can be seen in terms of formal catagories and universal principals and as can Physical Geography.

HUMAN GEOGRAPHY:-

भौतिक भूगोल मानव भूगोल की द्वैधता बिना मानव भूगोल के विकास को जाने नहीं समझा जा सकता है। रिटर एवं रैटजेल का नाम उन विद्वानों में पहले आता है जिन्होंने मानव को स्थलाकृतियों में परिवर्तन लाने वाले कारक के रूप में स्वीकार किया। फैब्रे ने इस तथ्य को और अधिक जोर देकर स्पष्ट किया कि मानव स्थलरूप का एक तत्व है जिसका कार्यकलाप स्थलरूप से संबंधित (Incorporated) होता है और जो वातावरण में परिवर्तन लाकर इसे मानवीकरण (Humanize) करता है। इनके शब्दों में:-
"We deal with man work, man calculation, man movement. ...." मानव को भूगोल में सशक्त स्थान दिलाने का कार्य विडाल-डी ला-ब्लाश ने School of human geography स्थापित। इन्होंने सांस्कृतिक दृश्यभूमि के निर्धारक कारकों में प्राकृत तत्वों को कम महत्व दिया।

जीसं ब्रुंश ने कार्यकलाप एवं अंतर्संबंधता के सिद्धान्त को विकसित किया। आगे चलकर डिमांजियो ब्लाशे परंपरा का बड़ा समर्थक बना। अमेरिका मे मार्क जैफरसन ने " place, "The primate city" "The civilizing rail" जैसे सिद्धान्त मानव एवं नगरीय भूगोल मे दिया इस तरह से मानव भूगोल के समर्थक का मूल दर्शन मानव व प्रकृति के बीच के प्रगाढ संबंधों को स्थापित करने को था जिसमे दोनों परस्पर निर्भर होते है।

PHYSICAL V/S HUMAN GEOGRAPHY- औचित्य:

भूगोल को दो खण्डों मे विभाजित कर अपना स्वतंत्र अध्ययन कई प्रश्नों को उत्पन्न करता है -

1) बड़े परिश्रम से किये अनुसंधानों के बाद बहुत से भूगोलवेत्ताओं ने यह निष्कर्ष निकाला है कि पृथ्वीतल पर प्रकृति द्वारा उत्पन्न स्थलरूप एवं मानव द्वारा उत्पन्न सांस्कृतिक स्थलरूप का एकदम से अलग-अलग विभाजन अथवा अध्ययन असंभव है क्योंकि दोनो का एक दूसरे पर प्रभाव होता है। ब्राजील का कॉफी बगान, असम की चाय बगान अथवा मलाया का रबड़ बगान एक नजर मे भले ही प्राकृतिक उपज लगे किन्तु ये सारे मानवीय क्रिया के प्रतिफल है इसी तरह मानव भूगोल के अध्ययन तत्व कृषि, यातायात, उद्योग आदि भौतिक भूगोल के तत्व , जलवायु, धरातल, मिट्टी अपवाह के प्रभाव से न तो रहित होती है और न ही इसके बिना सम्पूर्ण अध्ययन संभव है।

2) भूगोल का आधारभूत क्षेत्र भूगोल पृथ्वीतल पर तथ्यों के क्षेत्रीय वितरण का अध्ययन करता है इस तरह के द्वैतता से आहत होता है। क्योंकि क्षेत्रीय वितरण मे भौतिक एवं मानवीय दोनो तथ्यों तत्व

शामिल रहते हैं। इस तरह भूगोल तो एक सम्पर्क विज्ञान की भूमिका निभाता है जो भौतिक विज्ञान एवं मानव विज्ञान के बीच पुल का काम करता है। ऐसे मे भूगोल का ही विभाजन कहाँ तक उचित है?

3) भूगोल को भौतिक अथवा मानवीय तत्वो के आधार पर सैद्धांतिक शोध के लिए निश्चित नियम स्थापित कर उनके परिणाम परखने के लिए विशेषज्ञो द्वारा अलग-अलग विशिष्ट अध्ययन शायद तर्क संगत दिखाई दे किंतु शोध का लक्ष्य एक ऐसा उपादान है। जिससे विषय का पुनः अंतर्निहित रूप स्पष्ट हो अन्यथा भौतिक भूगोल के सभी शाखा विषय भौतिकी, रसायन, गणित आदि विषयों से जकड़े स्वतंत्र विज्ञान के अंग माने जाएँगे।

CONCLUSION

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि भूगोल विषय का दो हिस्सों मे विभाजन या बाँटने की संकल्पना पूर्णतः मिथ्या है। दोनों पक्ष एक दूसरे से अंतर्संबंधित हैं। भौतिक भूगोल के प्रत्येक विभाग (Geomorphology, Oceanography, Climatology) मे मानवीय छाप सम्मिलित रहती है। उसी तरह मानव भूगोल की शाखा (जनसंख्या, कृषि, आर्थिक भूगोल) मे भी भौतिक तत्वों का अध्ययन शामिल होता है। अतः भौतिक भूगोल बनाम मानव भूगोल का द्वैत सिर्फ अध्ययन की सुविधा एवं विशेषीकरण तक ही सीमित होना चाहिए। अंततः भूगोल के पक्षों का समगत अध्ययन न सिर्फ उचित है बल्कि भूगोल के उपयोगिता बनाए रखने के लिए समय की मांग है।

The end